

भाव संवेदनाओं की गंगोत्री: चेतना का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक जागरण

इतिहास के ५ महान व्यक्तित्वों की मनोवैज्ञानिक क्रांति और करुणा का विज्ञान (अध्याय ५ - ९)

अहंकार की
जड़ता



संवेदना का
ट्रिगर



आंतरिक
क्रांति



सक्रिय लोक
कल्याण

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सम्वेदना (Empathy) कैसे काम करती है?

Step 1: सामाजिक ट्रिगर (पीड़ा का दृश्य/संवाद)



Step 2: मिरर न्यूरोन्स का सक्रिय होना
(दूसरे का दर्द अपना महसूस होना)



Step 3: ऑक्सीटोसिन का स्राव
(जुड़ाव की अनुभूति)



Step 4: न्यूरोप्लास्टिसिटी (मस्तिष्क की संरचना में
बदलाव, 'स्व' से 'सर्व' की ओर शिफ्ट)



Step 5: प्रो-सोशल बिहेवियर (सक्रिय परोपकार)



विज्ञान सिद्ध करता है कि जब
भाव-संवेदनाएं जागती हैं, तो
व्यक्ति निषिध्य नहीं रह सकता।

वसन्त पंचमी १९९०
को वन्दनीया माताजी
से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा। ज्ञान
शरीर का प्रकाश जन-
जन के बीच में पहुँचना
ही चाहिए और आप
सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को
क्रान्तिधर्मी साहित्य के
रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास
करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर, क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

आंडाल का सक्रिय समर्पण: निषिध्याता से क्रांति की ओर

पथ १: निषिध्य भक्ति

सीमित मान्यताएं

मंदिर व पूजा-पाठ
तक सीमित

केवल स्वयं का मोक्ष
(Self-Interest)

पथ २: सक्रिय समर्पण (आंडाल का मार्ग)

आत्मचेतना का
जागरण

विश्व-उद्यान को सुंदर
बनाने का संकल्प

जन-जन का दर्द
अपनाना

'अलवारों' (Alvars)
की टोली का निर्माण

Empathy-Altruism Hypothesis: जब समर्पण सामूहिक कल्याण से जुड़ता है, तो मानव मस्तिष्क 'डोपामाइन' (Dopamine) उत्सर्जित करता है, जो असीम आनंद देता है। इसे विज्ञान में 'Helper's High' कहते हैं।

करुणा का विस्तार: तिरुप्पार्वे का संदेश



शांत स्थिर दिखना अकर्मण्यता नहीं,
बल्कि तेजी से घूमते लट्टू की तरह
चरम क्रियाशीलता है।

पर-पीड़ा (Empathy) के बिना
ईश्वर से जुड़ना असंभव है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

कलिंग युद्ध और अशोक का 'संज्ञानात्मक असंगति' (Cognitive Dissonance)



मनोविज्ञान: जब व्यक्ति की अपनी मान्यता (वीरता) और उसकी वास्तविकता (क्रूरता) आपस में टकराती है, तो भयानक मानसिक पीड़ा (Dissonance) उत्पन्न होती है। यही सत्य का ट्रिगर है।

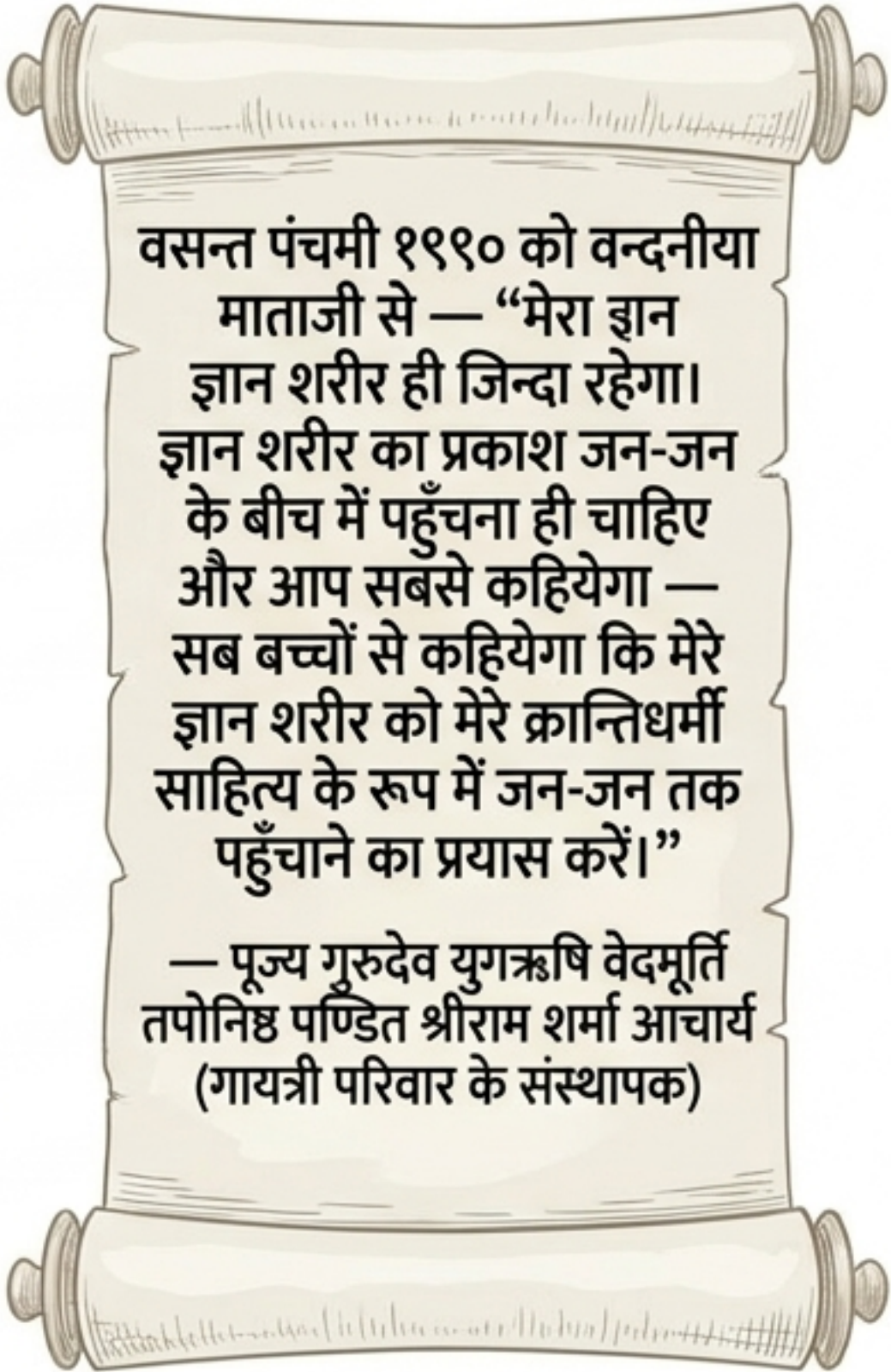
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



चण्ड अशोक से 'अशोक महान' (न्यूरोप्लास्टिसटी का अद्भुत उदाहरण)

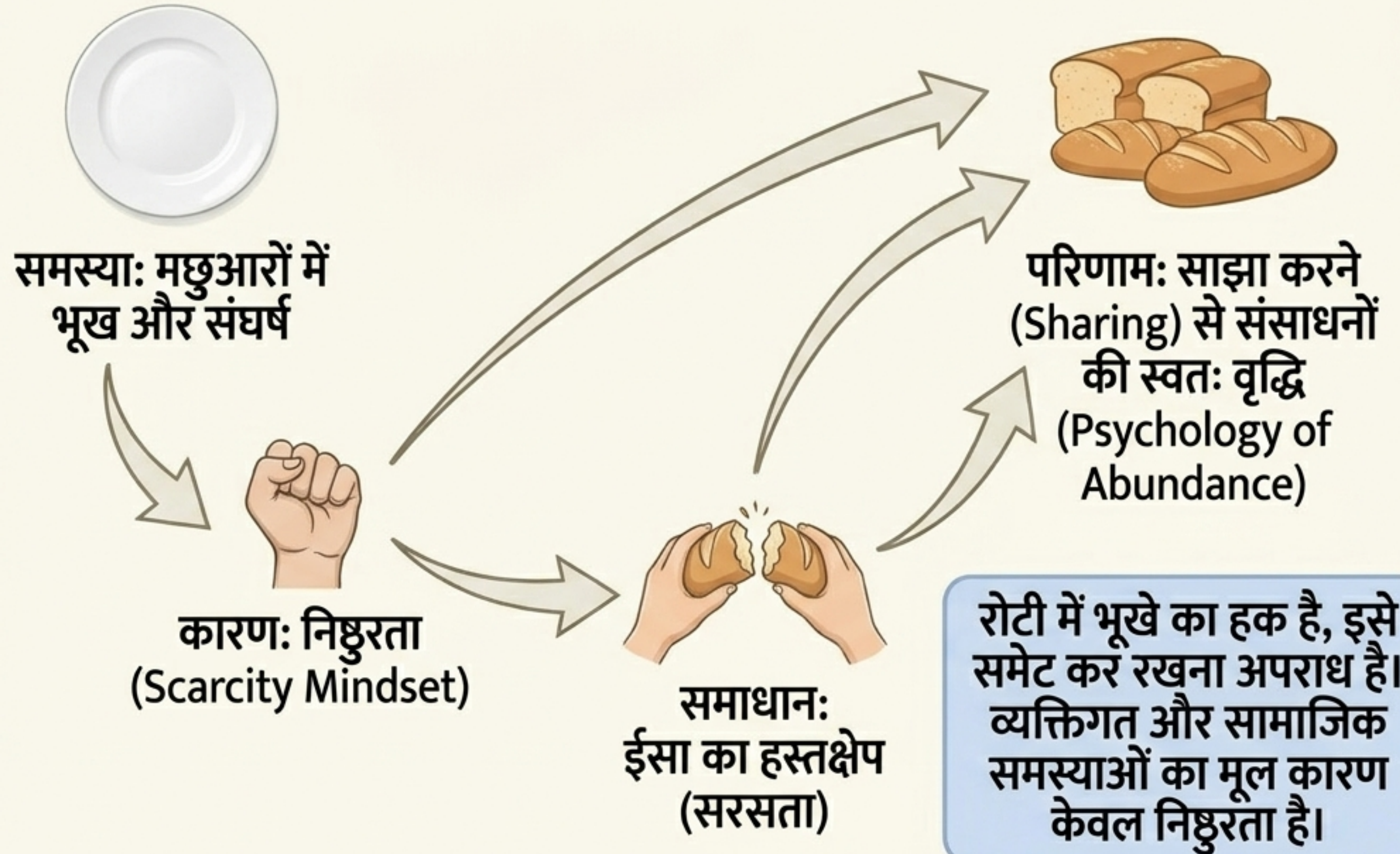
आयाम (Dimension)	चण्ड अशोक (अहंकार)	अशोक महान (सम्वेदना)
दृष्टिकोण	बस्तियां उजाड़ना, साम्राज्य विस्तार	त्रास से घिरे लोगों को बचाना
संपत्ति	अथाह वैभव और विलास	केवल एक चीवर, सुई, छलनी और तूम्बा
विरासत	रक्तपात और संहार का इतिहास	पुत्र-पुत्री (महेन्द्र-संघमित्रा) का लोकमंगल हेतु दान

आचार्य उपगुप्त का सत्संग: मस्तिष्क की पुरानी हिंसक न्यूरल पाथवे (Neural Pathways) को मिटाकर करुणा के नए पाथवे का निर्माण।

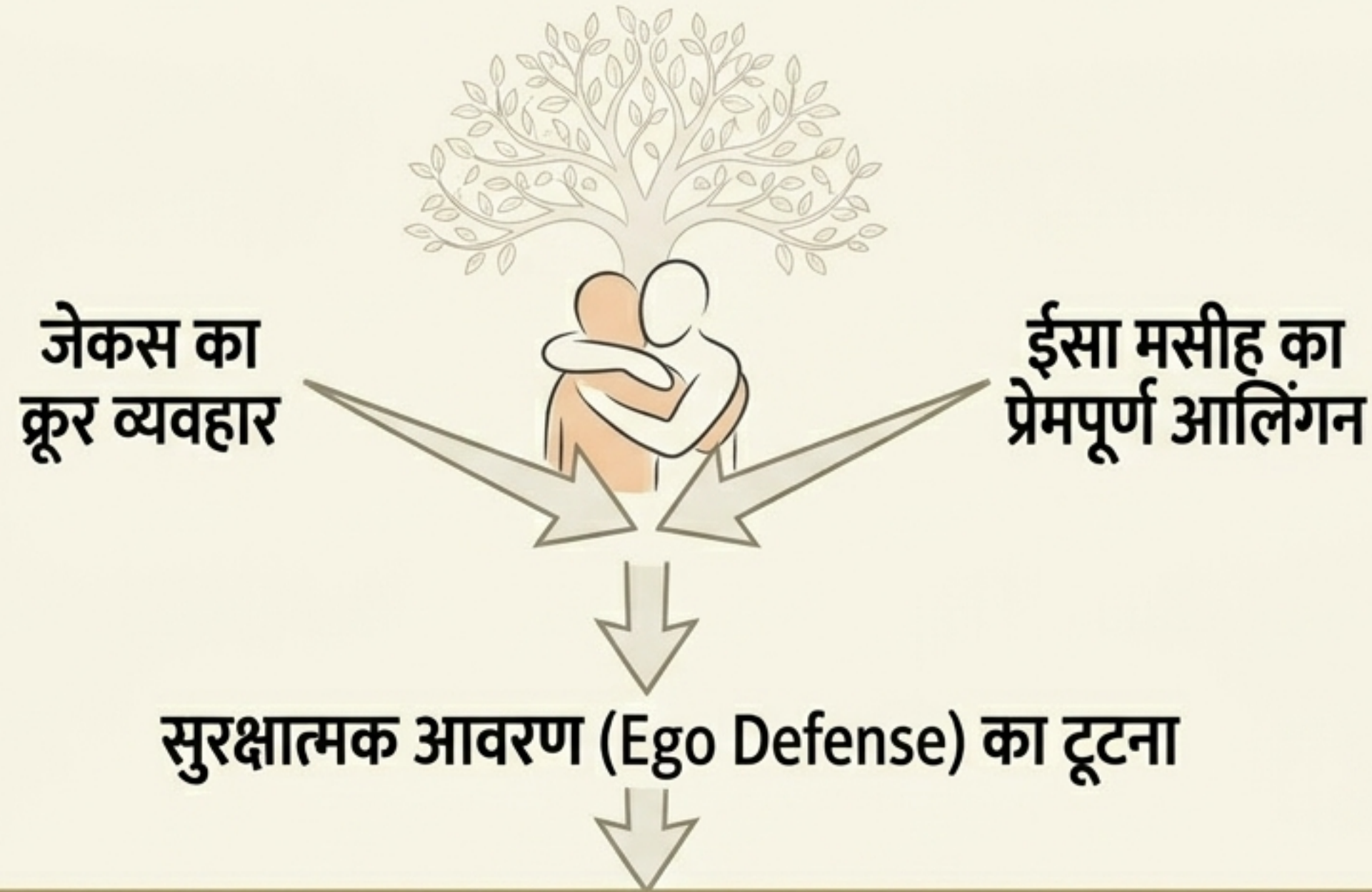


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचाना का प्रकाश जन-जन के बीच और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से हाँयोगा कि मेरे ज्ञान सबसे कहियेगा मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जा का प्रयास करें।” – पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा ब्राम्हने आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

ईसा मसीह: अभाव में भी करुणा की प्रचुरता



‘होली घोस्ट’ (पवित्र आत्मा): जाग्रत भाव-सम्वेदना का विज्ञान



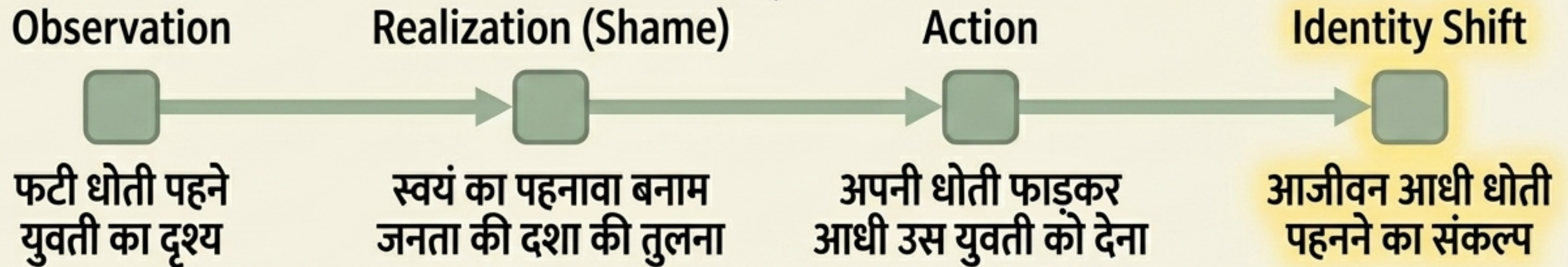
सहानुभूति का जागरण (Mirroring Pain - ‘यदि यही तुम्हारे परिवार के साथ हो?’) → धन-संपत्ति दरिद्र-नारायण को अर्पित।

क्रास (Cross) का वास्तविक अर्थ: आदर्शवादी भावों के लिए हँसते-हँसते कष्ट सहने की तैयारी।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

कर्मवीर से 'महात्मा' बनने का ट्रिगर क्षण



Empathy Gap

मनोविज्ञान: अंधेरा मिटाने के लिए केवल एक तीली (सम्बेदना की लौ) की आवश्यकता होती है। जब जनसामान्य की पीड़ा व्यक्तिगत पीड़ा बन जाती है, तो महानता का जन्म होता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

महानता का वास्तविक मापदंड

मार्ग १: झूठा बड़प्पन (Ego-Driven)

- वैभव, विलास
- सूट-बूट
- नौकरों पर रौब
- निष्ठुरता
(सम्राट जार्ज पंचम का दृष्टिकोण)

मार्ग २: सच्ची महानता (Empathy-Driven)

- लोक-सेवा का गौरव-बोध
- सर्व-सामान्य की समस्याओं से व्याकुलता
- सादगी
(गाँधी जी का दृष्टिकोण)

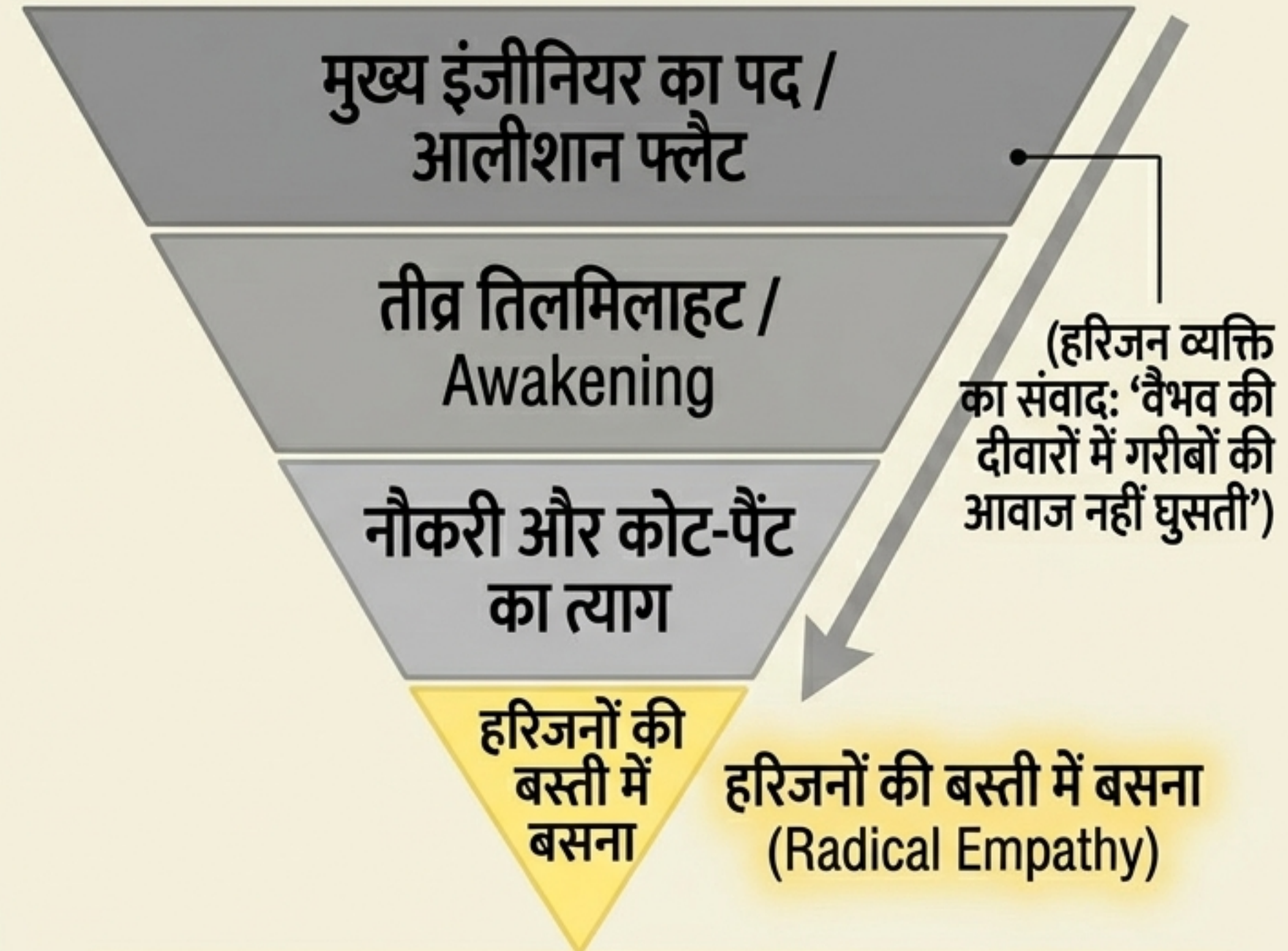
The Multiplier Effect of Empathy: गाँधी जी का सबसे बड़ा कार्य केवल स्वराज्य नहीं था, बल्कि विनोबा, पटेल, नेहरू जैसे समाज सेवियों की पूरी शृंखला गढ़ना था।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप गा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अमृतलाल ठक्कर से 'ठक्कर बापा' तक का सफर

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



Core Principle: कोरी वाणी से कल्याण नहीं होता; उपदेष्टा को अपनी अनुभूति को पीड़ित के साथ एक करना पड़ता है।

जन-करुणा की सरिता: दिव्य दृष्टि का जागरण

दृष्टि-विहीन (Apathy)

आंखों के होते हुए भी मानवता की तड़फड़ाहट न दिखना (जैसे जयपुर का बाहरी विलास)।



दिव्य-दृष्टि (Empathic Vision)

मलिन बस्तियों में नारायण के दर्शन (हरिजनों की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझना)।

Spiritual Insight: दलित की पीड़ा बापा के लिए 'गजराज की पुकार' के समान थी। संवेदना ही वह दिव्य दृष्टि है जो हमें भावी परिस्थितियों (धरती के स्वर्गीकरण) के योग्य बनाती है।

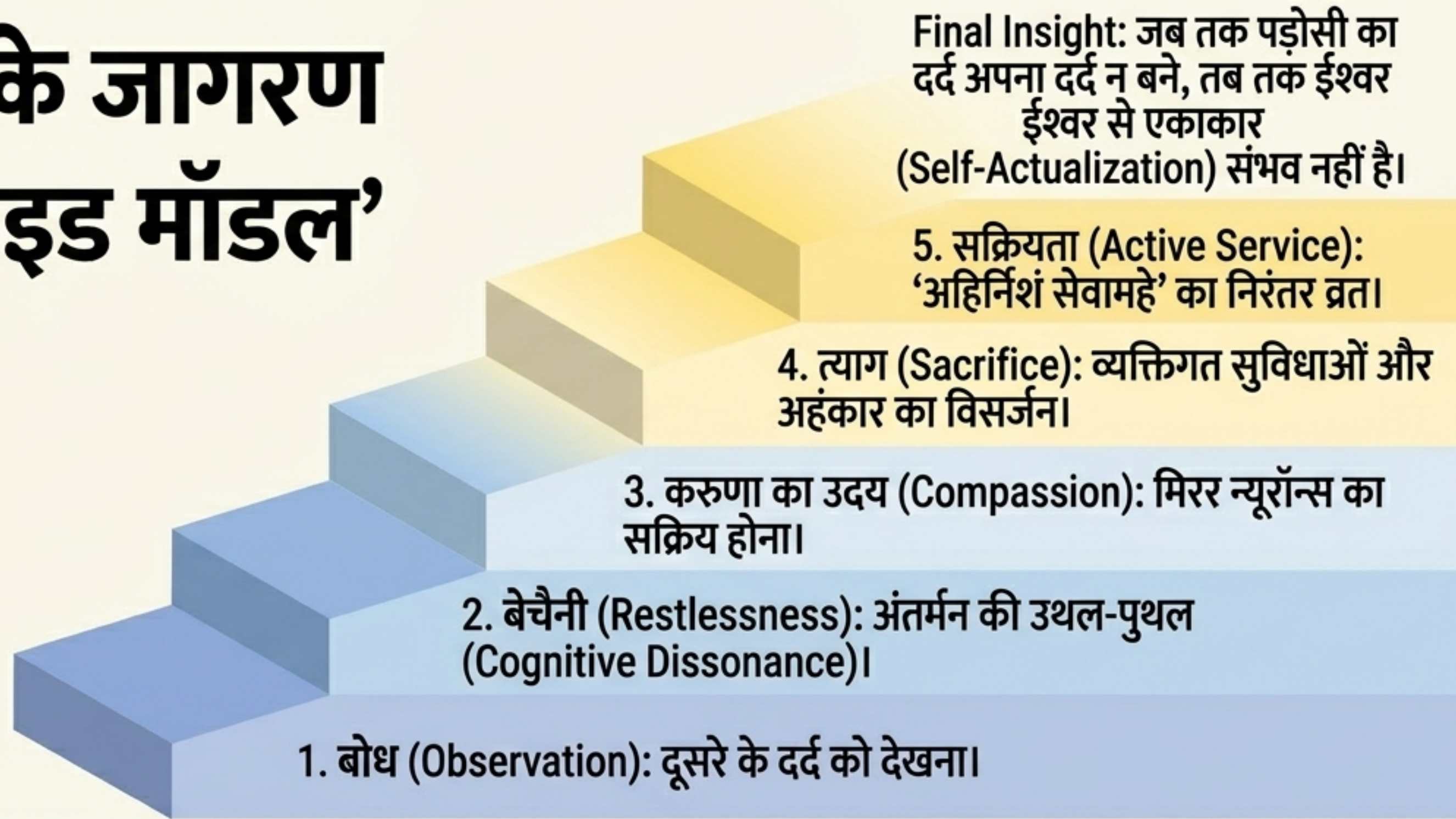
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी रू में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

आंतरिक क्रांति का ब्लूप्रिंट (Synthesis Matrix)

महापुरुष	अहंकार/सुविधा की स्थिति	संवेदना का ट्रिगर (Trigger)	त्याग और कार्य (Action)	मनोवैज्ञानिक प्रभाव
आंडाल	सांसारिक विवाह	समाज का टूटता घर	विवाह ठुकराया, अलवार टोली	Helper's High
अशोक	साम्राज्य और क्रूरता	युद्धबंदी का सत्य वचन	चीवर पहना, बच्चों का दान	Neuroplasticity
ईसा मसीह	स्वयं की सुरक्षा	जेकस/ जनता की भूख	शूली पर चढ़े, सेवा	Empathy-Altruism
गाँधी	सूट-बूट, प्रतिष्ठा	फटे चीथड़े में युवती	आधी धोती, लोक-सेवी निर्माण	Ego to Eco Shift
ठक्कर बापा	इंजीनियर का जीवन	हरिजन का संवाद	कोट-पैंट त्यागा, बस्ती में बसे	Social Integration

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्राहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

भाव-चेतना के जागरण का 'यूनिफाइड मॉडल'



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

निष्ठुरता का लबादा उतारें, स्वर्गीय राज्य का निर्माण करें

The Final Truth:
भगवान जब भी आता है,
एक 'बेचैनी' बनकर आता है।

प्रवेश निषेध
(निष्ठुरता)

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन
के बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे
ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन
तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

हमारा आज का संकल्प:
अपनी दिव्य-सम्बेदनाओं को
जाग्रत करें, क्रान्तिधर्मी
साहित्य पढ़ें और जन-जन
तक पहुंचाएं। यही
आत्मजाग्रति का क्षण है।